Muskurana Sunnat He (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 240
Weekly Booklet : 240

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "नेकी की दा'वत" की एक क़िस्त मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

मुस्कुराना सुन्नत है

सफ़हात 20

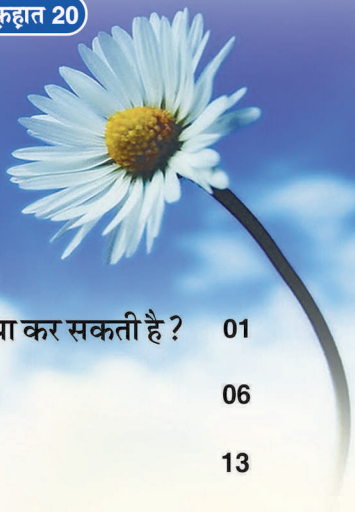

- मा'मूली सी मुस्कुराहट क्या कर सकती है ? 01
- क्या सह़ाबा हंसते थे ? 06
- पढ़े लिखों की जहालतें 13
- मुस्कुराने के तिब्बी फ़ाएदे 17

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **मुस्कराना सुन्नत है**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

मुस्कुराना सुन्नत है

येह रिसाला (**मुस्कुराना सुन्नत है**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 9898732611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" सफ़ह़ा 245 ता 258 से लिया गया है।

मुस्कुराना सुन्नत है

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला "**मुस्कुराना सुन्नत है**" पढ़ या सुन ले, उसे प्यारे प्यारे मुस्कुराने वाले सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त से मुशर्रफ़ कर के जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** क़ियामत के रोज़ लोगों में मेरे नज़्दीक तर वोह होगा जिस ने मुझ पर ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे। (ترمذی، 2/27، حدیث:484)

नेकी की दा'वत देना सदक़ा है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "अपने (दीनी) भाई से मुस्कुरा कर मिलना तुम्हारे लिये सदक़ा है और नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना सदक़ा है।" (ترمذی، 3/384، حدیث:1963)

बात करते हुए मुस्कुराना सुन्नत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे मुबारका में मुस्कुरा कर मिलने, नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने को

सदक़ा कहा गया। سُبْحٰنَ اللہ ! मुस्कुरा कर मिलने की तो क्या बात है ! मुस्कुरा कर मिलना, मुस्कुरा कर किसी को समझाना उ़मूमन नेकी की दा'वत के मदनी काम को निहायत सह्ल व आसान बना देता और ह़ैरत अंगेज़ नताइज का सबब बनता है। जी हां आप की मा'मूली सी मुस्कुराहट किसी का दिल जीत कर उस की गुनाहों भरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर सकती है और मिलते वक़्त बे रुख़ी और ला परवाही से इधर उधर देखते हुए हाथ मिलाना किसी का दिल तोड़ कर उस को مَعَاذَاللہ गुमराही के गहरे गढ़े में गिरा सकता है, लिहाज़ा जब भी किसी से मिलें, गुफ़्तगू करें उस वक़्त ह़त्तल इम्कान मुस्कुराते रहिये। अगर ख़ुश्क मिज़ाजी या बे तवज्जोही से मिलने की ख़स्लत है तो मिलनसारी और मुस्कुरा कर मिलने की आ़दत बनाने के लिये ख़ूब कोशिश कीजिये, बल्कि मुस्कुराने की आ़दत पक्की करने के लिये ज़रूरतन किसी की ज़िम्मेदारी भी लगाइये कि वोह दूसरों से बात करते हुए आप का मुंह फूला हुवा या सपाट महसूस करे तो गाहे ब गाहे याद दिहानी करवाते हुए कहता रहे या आप को इस त़रह़ की तह़रीर दिखा दिया करे : "बात करते हुए मुस्कुराना सुन्नत है।" जी हां वाक़ेई येह सुन्नत है। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "ह़ुस्ने अख़्लाक़" (73 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 15 पर है : ह़ज़रते उम्मे दरदा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाती हैं कि वोह हर बात मुस्कुरा कर किया करते, जब मैं ने उन से इस बारे में पूछा तो उन्हों ने जवाब दिया : "मैं ने ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराते रहते थे।"

(مکارم الاخلاق للطبرانی، ص319، رقم:21)

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 303)

शर्ह़े कलामे रज़ा : ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में शामिल ''सलामे रज़ा'' के इस मिस्रए़ ''जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें'' का आख़िरी लफ़्ज़, ''पड़ें'' आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मदनी सोच का अ़ज़ीम शहपारा है। क्यूं कि अगर ''पड़ें'' के बजाए ''पड़े'' लिखते तो मा'नन किसी एक वाक़िए़ की त़रफ़ इशारा माना जाता ! मगर आ'ला ह़ज़रत ने ''पड़ें'' लिख कर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सिफ़त बयान फ़रमा दी। चुनान्चे इस मिस्रअ़ का मा'ना है : ह़याते ज़ाहिरी में तो तस्कीन देने से ग़मज़दा दिलों की कलियां खिल उठती थीं मगर आज भी सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी दुखियारे को ख़्वाब में या किसी ग़ुलाम को क़ब्र में तसल्ली देते हैं तो वोह पुर सुकून हो जाता है। इस मिस्रए़ में येह भी इशारा है कि मह़शर में भी अपने गुनहगार उम्मतियों को ढारस बंधा कर चैन व क़रार बख़्शेंगे दूसरे मिस्रए़ के मा'ना हैं : उस तस्कीन बख़्श आ़दते करीमा पर लाखों सलाम हों। ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अख़्तरुल ह़ामिदी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इस शे'र पर क्या ख़ूब तज़्मीन बांधी है :

मुज़्त़रिब ग़म से होते हुए हंस पड़ें रन्ज से जान खोते हुए हंस पड़ें
बख़्त जाग उठें सोते हुए हंस पड़ें जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

हाथ मिलाने में मुस्कुराना मग़्फ़िरत का बाइ़स है

एक रिवायत में है कि सय्यिदुना नुफ़ैअ़ आ'मा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللهُ عَنْه से मेरी मुलाक़ात

हुई तो उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से मुसाफ़हा फ़रमाया (या'नी हाथ मिलाए) और मुस्कुराने लगे, फिर पूछा : जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं । तो फ़रमाने लगे कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे शरफ़े मुलाक़ात बख़्शा तो मेरे साथ ऐसे ही किया फिर मुझ से पूछा : जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ? तो मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं । तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते वक़्त मुसाफ़हा करते (या'नी हाथ मिलाते) हैं और दोनों एक दूसरे के सामने **अल्लाह** पाक के लिये मुस्कुराते हैं तो उन के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है । (معجم اوسط، 5/366 حدیث:7630)

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे
फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुस्कुराने की अच्छी बुरी निय्यतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में लफ़्ज़ "**अल्लाह** के लिये" अच्छी निय्यत की सराह़त करता है । बहर ह़ाल किसी मुसल्मान से हाथ मिलाना और दौराने गुफ़्तगू मुस्कुराना सिर्फ़ इसी सूरत में बाइ़से सवाबे आख़िरत व मग़्फ़िरत है जब कि येह हाथ मिलाना और मुस्कुराना सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने की निय्यत से हो । अपनी मिलनसारी का सिक्का जमाने, किसी मालदार या सियासी "शख़्सिय्यत" की ख़ुशनूदी पाने, दुन्यवी मज़्मूम मफ़ाद परस्ती वाली "ज़ाती दोस्ती" बढ़ाने और مَعَاذَاللّٰه अम्रद के हाथों के मसास (या'नी छूने) और उस की जवाबी मुस्कुराहट के ज़रीए गुनाहों भरी लज़्ज़त पाने

वग़ैरा बुरी निय्यतों के साथ न हो। वाक़ेई वोह इस्लामी भाई बड़े ख़ुश नसीब हैं जो रिज़ाए इलाही पाने, अपनी मग़्फ़िरत करवाने, इत्तिबाए सुन्नत का सवाब कमाने, मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल फ़रमाने, इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए इस्लामी भाइयों को नेक आ'माल का आ़मिल और सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने वग़ैरा ह़स्बे ह़ाल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मुलाक़ात व बात करते हुए मुस्कुराते रहते हैं।

क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है

खिलखिला कर हंसना मुनासिब नहीं क्यूं कि येह सुन्नत नहीं है बल्कि येह तो शैत़ान की जानिब से है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''اَلْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللّٰهِ या'नी क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कुराना **अल्लाह** की त़रफ़ से है।''

(معجم صغیر، 2/104، حدیث:1053)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी फ़रमाते हैं : क़ह्क़हे से मुराद आवाज़ के साथ हंसना है, शैत़ान इसे पसन्द करता है और उस पर सुवार हो जाता है जब कि तबस्सुम से मुराद बिग़ैर आवाज़ के थोड़ी मिक़्दार में हंसना है। (فیض القدیر، 4/706، تحت الحدیث:6196) मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुस्कुराना अच्छी चीज़ है (और) क़ह्क़हा बुरी चीज़, तबस्सुम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा थी (लिहाज़ा) जब किसी से मिलो मुस्कुरा कर मिलो। (मिरआतुल मनाजीह, 7/14)

क़ह्क़हा गुनाह नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रहे ! क़ह्क़हा लगाना अगर्चे शैत़ान की त़रफ़ से है, बुरा भी है और सुन्नत भी नहीं ताहम गुनाह नहीं है । बिलफ़र्ज़ किसी आ़लिम साहिब या बुज़ुर्ग को क़ह्क़हा लगाता पाएं तो उन की त़रफ़ से अपने दिल में हरगिज़ किसी क़िस्म का मैल न लाएं ।

ख़ामोशी ज़ियादा हंसी कम

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा ख़ामोशी इख़्तियार करने वाले और कम हंसने वाले थे । (مسند امام احمد، 7/407، حدیث:20853) ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अह़ादीसे मुबारका को जम्अ़ करने से जो बात ज़ाहिर हुई वोह येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ़म त़ौर पर तबस्सुम से ज़ियादा नहीं हंसते और कभी ज़ियादा हो जाता तो वोह हंसी होती और ज़ाहिर येही है कि क़ह्क़हा न होता । (مواہب اللدنیہ، 2/54)

क्या सह़ाबा हंसते थे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से पूछा गया कि क्या **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा हंसते थे ? फ़रमाया : हां और उन के दिलों में ईमान पहाड़ से मज़्बूत़ था । (شرح السنۃ، 6/375) मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : शायद साइल (या'नी पूछने वाले) ने वोह ह़दीस सुनी होगी, "ज़ियादा हंसना दिल मुर्दा करता है" तो उस ने सोचा होगा कि ह़ज़राते सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) कभी न हंसते होंगे (क्यूं कि) वोह ह़ज़रात (तो) ज़िन्दा दिल थे फिर उन्हें हंसी से क्या तअ़ल्लुक़ ! (सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के "हां" में) जवाब (देने) का मक़्सद येह है कि

हंसना ह़राम नहीं ह़लाल है, वोह ह़ज़रात (या'नी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) वोह हंसी न हंसते थे जो दिल मुर्दा कर दे या'नी हर वक़्त हंसते रहना बल्कि वोह हंसी हंसते थे जो दिल को शिगुफ़्ता (या'नी तरो ताज़ा) रखे और सामने वाले को भी शिगुफ़्ता (या'नी तरो ताज़ा) बना दे।

(मिरआतुल मनाजिह, 6/404)

किसी को हंसता देख कर पढ़ने की दुआ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब किसी को हंसता देखें तो "बुख़ारी शरीफ़" में वारिद येह दुआ पढ़ लेनी चाहिये : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ (या'नी **अल्लाह** पाक तुझे हंसता रखे) (بخاری، 4/123، حدیث:6085)

मुबल्लिग़ ए'लान के ज़रीए मस्जिद में हंसने की मुमानअ़त करे

मस्जिद में मौक़अ़ की मुनासबत से मुस्कुराने की तो इजाज़त है मगर हंसने या क़ह्क़ह़ा लगाने की इजाज़त नहीं। लिहाज़ा मस्जिद में दौराने बयान कोई ऐसी बात आने लगे जिस में ह़ाज़िरीन के हंसने का इम्कान हो तो मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह इस त़रह़ ए'लान करे :

तवज्जोह फ़रमाइये ! अभी हम मस्जिद में हैं और मस्जिद में ज़रूरतन सिर्फ़ मुस्कुराहट की इजाज़त है या'नी फ़क़त़ ऐसी हंसी जिस की ख़ुद को भी आवाज़ न आए, आवाज़ से हरगिज़ न हंसिये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है।"

(جامع صغیر، ص322، حدیث:5231)

नमाज़ में हंसने के अह़काम

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "नमाज़ के अह़काम" (496 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 30 ता 31 पर है : ﴿1﴾ रुकूअ़ व

सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ ने क़ह्क़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसा कि आस पास वालों ने सुना तो वुज़ू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि सिर्फ़ ख़ुद सुना तो नमाज़ गई वुज़ू बाक़ी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुज़ू। (مراقی الفلاح، ص91) मुस्कराने में आवाज़ बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं ﴿2﴾ बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में क़ह्क़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुज़ू बाक़ी है। (مراقی الفلاح، ص91) ﴿3﴾ नमाज़ के इलावा क़ह्क़हा लगाने से वुज़ू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना मुस्तहब है। (مراقی الفلاح، ص84) हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी क़ह्क़हा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि येह (क़ह्क़हा न लगाने की) सुन्नत भी ज़िन्दा हो और हम ज़ोर ज़ोर से न हंसें।

मुसल्मान भाई के लिये मुस्कुराना सदक़ा है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : तुम्हारा अपने भाई के लिये मुस्कुराना भी "सदक़ा" है, नेकी का हुक्म देना भी सदक़ा है, बुराई से मन्अ़ करना भी सदक़ा है, भटके हुए की राहनुमाई करना भी सदक़ा है, कमज़ोर निगाह वाले की मदद करना भी सदक़ा है, रास्ते से पथ्थर, कांटा और हड्डी का हटा देना भी सदक़ा है, अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना भी सदक़ा है। (ترمذی، 3/384، حدیث:1963) नीज़ एक रिवायत में फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : हर क़र्ज़ सदक़ा है। (شعب الایمان، 3/284، حدیث:3563)

माली सदक़े की ता'रीफ़

उ़मूमन जब लफ़्ज़ "सदक़ा" बोला जाता है तो ज़ेहन "ख़ैरात"

की त़रफ़ जाता है। बेशक ख़ैरात को भी सदक़ा बोलते हैं, आइये ! लगे हाथों "माली सदक़े" की ता'रीफ़ मा'लूम करते हैं। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "ज़ियाए सदक़ात" (415 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 32 ता 33 पर है : लुग़त में सदक़ा से मुराद عَطِيَّةٌ يُّرَادُ بِهَا الْمَثُوْبَةُ لَا الْمَكْرَمَةُ (المنجد) या'नी, "सदक़ा" वोह अ़त़िय्या (GIFT) है जिस के ज़रीए अपनी इ़ज़्ज़त बढ़ाने के बजाए सवाब का इरादा किया जाए। (मत़लब येह है कि वोह अ़त़िय्या (या'नी इन्आ़म) सदक़ा कहलाता है, जिस के देने का मक़्सद अपनी इ़ज़्ज़त बढ़ाना और वाह वा चाहना न हो सिर्फ़ सवाब की निय्यत से दिया गया हो) अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ जुरजानी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सदक़ा की ता'रीफ़ इन अल्फ़ाज़ में बयान की : هِيَ الْعَطِيَّةُ تَبْتَغِيْ بِهَا الْمَثُوْبَةَ مِنَ اللهِ تَعَالٰى या'नी, सदक़ा वोह अ़त़िय्या (GIFT) है जो **अल्लाह** पाक की बारगाह से सवाब की उम्मीद पर दिया जाए।

(کتاب التعریفات، ص95)

सदक़े इस इन्आ़म के क़ुरबान इस इक्राम के — हो रही है दोनों आ़लम में तुम्हारी वाह वाह

(ह़दाइक़े बख़्शिश, 135)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ना'तिया शे'र में फ़रमाते हैं : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रब्बे बारी के इस इन्आ़मो इक्राम पर मैं वारी जाऊं कि उस ने आप को तमाम मख़्लूक़ात में सब से बुलन्द शान का मालिक किया है और येह उसी का करम है कि दोनों जहानों में आप की अ़ज़्मतों और रिफ़्अ़तों के डंके बज रहे हैं।

सब से औला व आ'ला हमारा नबी — सब से बाला व वाला हमारा नबी

(ह़दाइक़े बख़्शिश, 138)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अन्दरूनी अमराज़ एक दम ग़ाइब हो गए !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहो़ल से हर दम वाबस्ता रहिये, नेक बनने के नुस्ख़े पर मब्नी नेक आ'माल के मुताबिक़ ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ार कर अपने आप को सुन्नतों के सांचे में ढालने की कोशिश करते रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आप की तरग़ीब व तह्रीस के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से एक अन्दरूनी अमराज़ से दो चार मरीज़ की शिफ़ायाबी की एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मैं एक अ़र्से से बा'ज़ अन्दरूनी अमराज़ का शिकार था। मरज़ की शिद्दत का येह आ़लम था कि जब भी सोता आज़्माइश हो जाती। इलाज पर कसीर रक़म ख़र्च करने के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हुवा, मैं इस मरज़ से तंग आ चुका था। मैं ने जब सुना कि मदनी क़ाफ़िलों में दुआ़एं क़बूल होती हैं तो हिम्मत कर के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान मैं ने दुआ़ की और इस की बरकत से मेरा मरज़ ऐसा ख़त्म हुवा कि गोया कभी था ही नहीं !

क़ल्ब पर ज़ंग हो, क़ाफ़िले में चलो नफ़्स से जंग हो, क़ाफ़िले में चलो
पाउं में लंग हो, क़ाफ़िले में चलो दर्द से तंग हो, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर से न घबराइये

اَلْحَمْدُلِلّٰه मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र शिफ़ा का सबब

बन गया और क्यूं न बनता कि दौराने सफ़र और वोह भी आ़शिक़ाने रसूल के कुर्ब में दुआ़एं जो मांगी थीं। **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों के कुर्ब में मांगी जाने वाली दुआ़ रद नहीं की जाती। अगर कभी क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर हो तो घबराना और जल्दी मचाना न चाहिये। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "फ़ज़ाइले दुआ़" (318 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 97 पर है : दुआ़ के क़बूल में जल्दी न करे ह़दीस शरीफ़ में है कि ख़ुदाए पाक तीन आदमियों की दुआ़ क़बूल नहीं करता। एक वोह कि गुनाह की दुआ़ मांगे, दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त्ए़ रेह़्म (या'नी रिश्ता काटना) हो, तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे, कि मैं ने दुआ़ मांगी अब तक क़बूल न हुई। ऐसा शख़्स घबरा कर दुआ़ छोड़ देता है और मत़लब से मह़रूम रहता है।

दुआ़ की क़बूलिय्यत का नुस्ख़ा

किसी मरीज़ को शिफ़ा न होती हो तो पहले कुछ ख़ैरात कर दीजिये फिर ग़ैर मकरूह वक़्त में दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगिये اِنْ شَآءَاللّٰه दुआ़ क़बूल होगी। "फ़ज़ाइले दुआ़" सफ़ह़ा 59 ता 60 पर है : (क़बूलिय्यते दुआ़ के आदाब में से) : अदब 5 : दुआ़ से पहले कोई अ़मले सालेह़ (या'नी नेक अ़मल) करे कि ख़ुदाए करीम की रह़मत उस (दुआ़ करने वाले) की त़रफ़ मुतवज्जेह हो। सदक़ा, ख़ुसूसन पोशीदा, इस अम्र में असरे तमाम रखता है (या'नी बिल ख़ुसूस छुपा कर ख़ैरात करना दुआ़ की क़बूलिय्यत में बहुत मुअस्सिर है) (पारह 28 सूरतुल मुजादलह आयत नम्बर 12 में है :)

فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ؕ
(پ28، المجادلہ:12)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो अपनी अ़र्ज़ से पहले कुछ सदक़ा दे लो।

(दुआ से क़ब्ल सदक़ा देना वाजिब नहीं मुस्तहब है) सफ़्हा 61 पर है : अदब 9 : वक़्ते कराहत न हो तो दो रक्अ़त नमाज़ ख़ुलूसे क़ल्ब से पढ़े कि जालिबे रह़मत (या'नी रह़मत का सबब) है और रह़मत, मूजिबे ने'मत। (12 वक़्तों में नवाफ़िल पढ़ना मन्अ़ है इन 12 अवक़ात की तफ़्सील मक्तबतुल मदीना की किताब, फ़ज़ाइले दुआ सफ़्हा 61 ता 62 पर ह़ाशिये में देख लीजिये)

नाकारा गुर्दों का इलाज हो गया

एक "शख़्सय्यत" को यरक़ान (पीलिया) हो गया, पेट में पानी भर गया, गुर्दे भी फ़ेल हो गए, और बेहोशी छा गई, बहुत बड़ा आदमी था और मां बाप का इक्लौता (या'नी एक ही बेटा) और इन के बुढ़ापे का सहारा भी येही था, कोहराम मच गया 18 डॉक्टर देख कर चले गए, सभी ने ला इलाज क़रार दिया, 19वां डॉक्टर आया, उस ने उस के वालिदैन को बताया कि त़रीक़ए इलाज में एक कमी है और वोह आप ही पूरी कर सकते हैं, मुझे उम्मीद है **अल्लाह** की रह़मत हो जाएगी। ह़स्बे तौफ़ीक़ कुछ सदक़ा यानी ख़ैरात कर दीजिये फिर दो रक्अ़त नफ़्ल अदा कर के गिड़गिड़ा कर दुआ मांगिये। ख़ैरात, नवाफ़िल और दुआ की तरकीब शुरूअ़ कर दी गई, वालिदैन तीन दिन तक गिड़गिड़ा कर अपने बेटे की सिह़्ह़त की बारगाहे इलाही में भीक मांगते रहे, तीसरे दिन اَلْحَمْدُلِلّٰه गुर्दों ने काम करना शुरूअ़ कर दिया, यरक़ान और पेट के पानी में कमी आनी शुरूअ़ हुई और एक हफ़्ते के अन्दर अन्दर ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मरीज़ बिल्कुल सिह़्ह़त याब हो गया।

शिफ़ा दे इलाही शिफ़ा दे इलाही गुनह के मरज़ को मिटा दे इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दो नशे

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक तुम लोग अपने रब्बे करीम की त़रफ़ से दलील (या'नी हिदायत) पर हो जब तक तुम में दो नशे ज़ाहिर न हों, एक जहालत का नशा दूसरा दुन्यवी ज़िन्दगी से मह़ब्बत का नशा। पस तुम लोग (अभी तो) नेकी का हुक्म देते हो और बुराइयों से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पाक की राह में जिहाद करते हो (लेकिन) जब तुम में दुन्या की मह़ब्बत पैदा हो जाएगी तो तुम न तो नेकी का हुक्म दोगे और न बुराइयों से मन्अ़ करोगे और न **अल्लाह** पाक की राह में जिहाद करोगे। पस उस वक़्त क़ुरआन व सुन्नत की बात कहने वाला मुहाजिरीन और अन्सार में सब से पहले ईमान लाने वालों की त़रह़ होगा।

(مجمع الزوائد، 7/533، حدیث:12159)

पढ़े लिखों की जहालतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना येह दोनों ''मज़्मूम नशे'' आ़म देखे जा रहे हैं। जहालत के नशे में आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत बद मस्त है। शायद आप समझें कि ता'लीम तो ख़ूब आ़म हो गई है और जगह ब जगह स्कूल और कॉलेज खुल चुके हैं अब जहालत कहां रही है ? तो मुआ़फ़ कीजिये दुन्यवी ता'लीम ''जहालत'' का इ़लाज नहीं। सह़ीह़ येही है कि इस्लामी अह़काम पर मब्नी फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल करने ही से दीन से जहालत दूर हो सकती है। फ़ी ज़माना मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत में ज़रूरी दीनी मा'लूमात का बेह़द फ़ुक़्दान (या'नी

न होना) है। आज दुन्या जिन लोगों को "ता'लीम याफ़्ता" कहती है उन की अक्सरिय्यत दुरुस्त मख़ारिज से क़ुरआने करीम नहीं पढ़ सकती ! येह जहालत नहीं तो क्या है ? "पढ़े लिखों" से वुज़ू और ग़ुस्ल का सहीह़ त़रीक़ा या नमाज़ के अरकान पूछ लीजिये शायद ही कोई बता पाए, इन से जनाज़े की दुआ सुनाने की फ़रमाइश कर देखिये शायद बग़लें झांकने लगें ! अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल अक्सर मुसल्मानों की तवज्जोह सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम की त़रफ़ है, इसी की हर त़रफ़ पज़ीराई (या'नी मक़्बूलिय्यत) है, सारी दौलत व क़ुव्वत इसी पर सर्फ़ की जा रही है जब कि दीनी ता'लीम के इदारे मुफ़्त पढ़ाने, मुफ़्त खिलाने और क़ियाम की मुफ़्त सहूलतें बहम पहुंचाने के बा वुजूद वीरान पड़े हैं। यक़ीनन येह सब "दुन्यावी ज़िन्दगी के नशे" के करिश्मे हैं।

मुझे दर पे फिर बुलाना मदनी मदीने वाले मए इश्क़ भी पिलाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अगलों की मिस्ल अज्र

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे अ़ज़ीम है : "बेशक मेरी उम्मत में से बा'ज़ लोग ऐसे भी होंगे। जो अपने अगलों (या'नी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم) की मिस्ल अज्र दिये जाएंगे। يُنْكِرُوْنَ الْمُنْكَر वोह बुराई से मन्अ़ करते होंगे।" (مسند امام احمد، 5/576، حدیث:16592)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी **अल्लाह** पाक मुसल्मानों की उस क़ौम को जिन के ज़रीए दीन को तक़्विय्यत मिलेगी, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मिस्ल सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा। (فیض القدیر، 1/680، تحت الحدیث:2485)

कोई मुबल्लिग़ किसी सह़ाबी के बराबर हो ही नहीं सकता

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा रिवायत से कोई येह न समझ ले कि बुराई से मन्अ़ करने वाले मुबल्लिग़ीन को सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से बराबरी ह़ासिल हो जाएगी हरगिज़ ऐसा नहीं, येह तै़ शुदा अम्र है कि सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان को जो शरफ़े सह़ाबिय्यत ह़ासिल है इस का मुक़ाबला ग़ैरे सह़ाबी उम्मती को मिलने वाली कोई भी फ़ज़ीलत नहीं कर सकती । सरवरे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : لَاتَسُبُّوۡا اَصۡحَابِیۡ فَلَوۡ اَنَّ اَحَدَکُمۡ اَنۡفَقَ مِثۡلَ اُحُدٍ ذَهَبًا مَابَلَغَ مُدَّ اَحَدِهِمۡ وَلَا نَصِيۡفَهٗ या'नी मेरे किसी सह़ाबी को गाली न दो अगर तुम में से कोई उ़हुद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च करे तो वोह उन के एक या निस्फ़ मुद को नहीं पहुंचेगा । (بخاری، 2/522، حدیث:3673) मुद एक पैमाना है जो दो ह़िजाज़ी रत़्ल का होता है और रत़्ल तक़रीबन आधे सेर वज़्न का होता है और कोई ग़ैरे सह़ाबी करोड़ों नेकियां कर के भी किसी एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه के मर्तबे को नहीं पहुंच सकता जैसा कि मक्तबतुल मदीना की किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द 1 सफ़ह़ा 253 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه लिखते हैं : "कोई वली कितने ही बड़े मर्तबे का हो, किसी सह़ाबी के रुत्बे को नहीं पहुंचता ।" सफ़ह़ा 247 पर फ़रमाते हैं : ह़दीस में हमराहियाने सय्यिदुना इमाम महदी (رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه) की निस्बत आया कि : "उन में एक के लिये पचास का अज्र है, सह़ाबा (عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان) ने अ़र्ज़ की : उन में के पचास का या हम में के ? फ़रमाया : बल्कि तुम में के ।" तो अज्र उन (या'नी सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡه के साथियों)

का ज़ाइद हुवा, मगर अफ़्ज़लिय्यत में वोह (लोग) सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के हमसर (या'नी बराबर) भी नहीं हो सकते, ज़ियादत (या'नी ज़ाइद होना) दर कनार, कहां इमाम महदी (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) की रफ़ाक़त (या'नी साथी होना) और कहां हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सह़ाबिय्यत ! इस की नज़ीर (या'नी मिसाल) बिला तश्बीह यूं समझिये कि सुल्त़ान (या'नी बादशाह) ने किसी मुहिम (या'नी जंग) पर वज़ीर और बा'ज़ दीगर अफ़्सरों को भेजा, उस (जंग) की फ़त्ह़ पर हर अफ़्सर को लाख लाख रुपै इन्आ़म दिये और वज़ीर को ख़ाली परवानए ख़ुशनूदिये मिज़ाज दिया तो इन्आ़म उन्हीं (अफ़्सरों) को ज़ाइद मिला, मगर कहां वोह (लाख लाख रुपै पाने वाले अफ़्सरान) और कहां (बादशाह की ख़ुशनूदी की सनद पाने वाला) वज़ीरे आ'ज़म का ए'ज़ाज़ ! (बहारे शरीअ़त, जि. 1/ 247, 253)

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शाने अ़ज़मत निशान को ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बारे में मन्क़ूल इन दो ह़िकायतों से समझिये : ﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़फ़ा बिन इमरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से पूछा गया : क्या ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से बेहतर हैं ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को जलाल आ गया और फ़रमाने लगे कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबी पर किसी (ग़ैरे सह़ाबी) को क़ियास न किया जाए, ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रसूले अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कातिबे वह़ी और वह़ी पर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अमीन हैं । (تاریخ بغداد، 1/224، وتاریخ دمشق، 59/208)

﴿2﴾ किसी ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से

पूछा : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ में से कौन अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : "**अल्लाह** की क़सम ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के घोड़े की नाक में दाख़िल होने वाला ग़ुबार ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से हज़ार गुना बेहतर है।" (فتاویٰ حدیثیہ، ص401) शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ह़िकायत नम्बर 2 की वज़ाह़त करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं कि इस से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की मुराद येह है कि ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने हुज़ूरे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत व सोह़बत का जो शरफ़ पाया है उस के बराबर कोई अ़मल या शरफ़ हो ही नहीं सकता। (فتاویٰ حدیثیہ، ص401)

हम को अस्ह़ाबे मह़बूबे ख़ुदा से प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰہ दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब नेकी की दा'वत का मज़्मून यहां ख़तम हुवा)

मुस्कुराने के ह़ैरत अंगेज़ त़िब्बी फ़वाइद

★इन्सानी चेहरे में दो सो प्वाइन्ट्स ऐसे हैं जिन से मुख़्तलिफ़ एक्सप्रेशन्ज़ (Expressions) और जज़्बात मसलन ग़ुस्सा, ग़म, अफ़्सुर्दगी, शर्मिन्दगी वग़ैरा का इज़्हार होता है और येह दो सो प्वाइन्ट्स मिल कर चेहरे पर मुख़्तलिफ़ तअस्सुरात देते हैं। मुस्कुराहट चेहरे के लिये वाह़िद ऐसा फ़े'ल

है जिस की वज्ह से येह दो सो के दो सो प्वाइन्ट्स ह़रकत में आ जाते हैं।

★जो शख़्स मुस्कुराने का आ़दी नहीं होता तो उस का चेहरा एक्सप्रेशन लेस (Expressionless) या'नी जज़्बात से आ़री हो जाता है बल्कि यूं समझ लें कि ठन्डा हो जाता है।

★ **अल्लाह** पाक ने इन्सानी जिस्म में बीमारियों से लड़ने का जो सिस्टम रखा है जिसे (Immune System) कहते हैं मुस्कुराने से उस की त़ाक़त में इज़ाफ़ा होता है।

★टेन्शन रिलीफ़ (Tension relief) करने में मुस्कुराहट अहम किरदार अदा करती है और येह ब्लड प्रेशर (Blood Pressure) पर फ़ाएदेमन्द असर डालती है।

★ यूनानी त़िब की किताब में है कि दमा (Asthma) जो एक ढीट मरज़ है, कहा जाता है कि येह क़ब्र तक साथ जाता है, मुस्कुराहट को दमा का भी एक इ़लाज क़रार दिया गया है।

★जब कोई शख़्स मुस्कुराता है तो उस के जिस्म से एन्ड्रोफ़ाइन (Endrophine) नामी एक हारमोन निकलता है जो एक क़ुदरती दर्द कुश (Natural Pain Killer) दवा है।

★ एक रिसर्च है कि एक मुस्कुराहट इन्सानी दिमाग़ को दो हजार चाक्लेट बार से ज़ियादा मुतह़र्रिक और ख़ुशगवार करती है।

★सब से बड़ी बात येह है कि प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तबस्सुम फ़रमाया करते थे, इस ज़िम्न में दो अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा कीजिये :

﴾1﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़र्स फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा किसी को मुस्कुराते नहीं देखा।

(ترمذی،5/542،حدیث:227)

﴾2﴿ ह़ज़रते जरीर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का कहना है कि जब से मैं ने इस्लाम क़बूल किया है रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ को नहीं रोका या'नी जो मांगा वोह अ़त़ा किया और जब भी मुझे देखा तो तबस्सुम फ़रमाते ही देखा। (ترمذی،5/542،حدیث:230)

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

ज़रा सोचिये ! अगर आप घर में हर किसी से मुस्कुरा कर बात करें, रास्ते में किसी से मुलाक़ात हो तो आप के चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाए, मस्जिद में नमाज़ियों से मुस्कुराहटों का तबादला हो रहा हो तो आप के अन्दर का मौसिम और बाहर का मौसिम कितना प्यारा हो जाएगा ! यक़ीनन अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मुसल्मान भाई से मुस्कुरा कर मिलने से اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم हर त़रफ़ महब्बत भरी फ़िज़ा क़ाइम हो जाएगी।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ लोग मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते रहते हैं और आप हर एक से मुस्कुरा कर मिलते हैं, इस के बारे में आप से सुवाल हुवा तो आप ने जो कुछ इर्शाद फ़रमाया वोह मुलाह़ज़ा कीजिये।

मुस्कुराहट का तोह़फ़ा

सुवाल : मुस्कुराने की भी एक ह़द होती है, आख़िर कार इस से भी आदमी थक जाता है मगर आप को मुसल्सल देखा गया है कि आप दौराने

मुलाक़ात हर एक से मुस्कुरा कर ही मिलते हैं तो क्या आप को थकावट महसूस नहीं होती ?

जवाब : येह तो मूड मूड की बात होती है लेकिन मैं कोशिश कर के अपना मूड अच्छा रखने की कोशिश करता हूं और मुस्कुराता रहता हूं क्यूं कि मुस्कुराना सुन्नत है और सुन्नत की निय्यत से मुस्कुराने में भी सवाब है। कभी कभार तो मैं ने नोट किया है कि मुसल्सल मुस्कुराने से यहां (गालों में) मा'मूली सा दर्द भी महसूस होता है लेकिन मैं ज़बरदस्ती मुस्कुराता हूं क्यूं कि हदीसे पाक में है कि मोमिन के सामने मुस्कुराना सदक़ा है (ترمذی، 3/384، حدیث:1963) जो बेचारा बड़ी मुश्किल से मुझ तक पहुंचा है क्या पता मेरी इस मुस्कुराहट से उस की दिलजूई हो जाए। जिस बेचारे की दो घन्टे लाइन में लगने के बा'द बारी आई है मैं उसे और कुछ न दूं तो क्या एक मुस्कुराहट का तोहफ़ा भी न दूं ? अगर मैं उसे मुस्कुरा कर देख लूं और مَاشَآءَاللہ कह कर पीठ थप्का दूं और सर पर हाथ फेर दूंगा तो इस से उस की दिलजूई हो जाएगी।

(अमीरे अहले सुन्नत की कहानी उन्ही की ज़बानी, क़िस्त,11)